जनजातीय शहीद तेलंगा खड़िया की 219वी जंयती समारोह

जनजातीय नायकों का अध्ययन और दस्ताबेजीकरण आवश्यकः डा.कुमार संजय झा

तेलंगा खड़िया की अगुवाई में खड़िया उलगुलान जनजातीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय-डा.दिनेश नारायण वर्मा

अंग्रेजों के खिलाफ जनजातियों को गोलबन्द करने में तेलंगा खड़िया का योगदान अद्वितीय-डा.अंगद किशोर

सभ्यता और संस्कृति से जनजातीय समाज की समझौता नहीं करने की प्रवृति ऐतिहासिक-डा. बिनोद कुमार

झारखंड देखो, प्रतिनिधि।

रामपुरहाट(पश्चिम बंगाल)इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,क्षेत्रीय केन्द्र,रांची और डा. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान,रांची के संयुक्त तत्वावधान में जनजातीय शहीद तेलंगा खड़िया 1806-1880 की 219वी जयंती मनाई गई। इस ऐतिहासिक अवसर पर 14 फरवरी 2025 को डा. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान के प्रशाल में आयोजित जंयती समारोह के बतौर मुख्य वक्ता के रूप में स्थानीय चांदमारी रोड, उत्तरपक्षी स्थित स्टडी एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक डा. दिनेश नारायण वर्मा (सेवानिवृत प्राध्यापक) ने तेलंगा खड़िया के क्रांतिकारी विचारों,गतिविधियों और संघर्षशील जीवन की शोधपरक विवेचना प्रस्तुत की और उन्हें एक महान क्रांतिकारी शहीद बताया। प्रशाल में उपस्थित प्राध्यापको,शोधार्थियों और छात्राओं को सम्बोधित करते हुए डा. वर्मा ने कहा कि साम्राज्यवादी लेखकों ने जिन जनजातियो को असभ्य,जंगली और बर्बर कहा था उन्होंने उनकी सत्ता को कभी स्वीकार नहीं किया और अपने नायकों की अगुवाई में विदेशी सत्ता का लगातार सशस्त्र प्रतिरोध करते रहे। पर जनजातियों के प्रतिरोध और उनके नायकों की गौरव गाथा और उनके अनुपम शौर्य और अनवरत संघर्ष का निष्पक्ष मूल्यांकन देश के इतिहास के पन्नों मे दर्ज नहीं है। इस आलोक में डा. वर्मा ने कहा कि आम लोगों की जानकारी सिदो,कान्हु,बिरसा मुंडा,भागीरथ मांझी,जतरा उरांव आदि कुछेक क्रांतिकारी जनजातीय शहीदों और वीरों तक ही सीमित है जबकि प्रोटो हो,संताल कोबलिया,राम मांझी,विजय मांझी,गोनो पिंगुआ आदि अनेक क्रांतिकारी जनजातीय नायकों की तरह छोटानागपुर क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता का लगातार सशस्त्र प्रतिरोध करने वाले महान जनजातीय शहीद तेलंगा खड़िया (1806-1880) के ऐतिहासिक संघर्ष और उनके अनुपम बलिदान की जानकारी अधिकांश लोगों को नहीं है। डा. वर्मा ने अपने अभिनव विवेचना पर आधारित अपने शोध अध्ययन को रेखांकित करते हुए कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जनजातियों पर किये जा रहे जुल्म,अन्याय,अत्याचार और उनकी भूमि अधिग्रहण के विरोध में तेलंगा खड़िया द्वारा किया गया ऐतिहासिक सशस्त्र प्रतिरोध देश के जनजातीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। डा. वर्मा ने खड़िया लोकगीतों का उल्लेख करते हुए जानकारी दी कि महान क्रांतिकारी जनजातीय शहीद तेलंगा खड़िया के संघर्षशील जीवन, एक लम्बा सशस्त्र संघर्ष,जुरी पंचायत और अखाड़ा का संगठन,उनकी गिरफ्तारी और उनका लोहरदगा जेल से कलकत्ता जेल स्थानानतरम,एक अंग्रेज दलाल बोधन सिंह द्वारा उनकी धोखे से निर्मम हत्या,स्थानीय लोगों में मातम और आम लोगों में उनकी लोकप्रियता से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का शानदार चित्रण खड़िया लोकगीतों में है। डा. वर्मा ने स्पष्ट किया कि कुछ विद्वान लेखकों के अनुसार कोल संघर्ष 1831-1833 से लेकर 1880 तक तेलंगा खड़िया ने गुरिल्ला युद्ध की टेकनीक अपनाते हुए जमींदारों,साहूकारों और अंग्रेजों की शोषण और दमन नीति की जबरदस्त खिलाफत की, पर ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार 1850-1860 की अवधि में तेलंगा खड़िया की अगुवई में खड़िया उलगुलान अपनी चरम सीमा पर था। उन्होंने कहा कि सम्भवतया देश के किसी अन्य जनजातीय नायक का इतना लम्बा और संघर्षशील जीवन का ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है। इसके बावजूद इतिहास की पुस्तकों में तेलंगा खड़िया के लड़ाकू जीवन और सक्रिय गतिविधियों की समुचित विवेचना नहीं है।उन्होंनेइस औपनिवेशिक प्रवृति की आलोचना की और भारतीय परिप्रेक्ष्य में जनजातीय नायकों का अध्ययन और लेखन आवश्यक बताया।जयंती समारोह के मुख्य अतिथि इतिहासकार,पुरातत्ववेता और सोन घाटी पुरातत्व परिषद के अध्यक्ष डा. अंगद किशोर ने कहा कि अंग्रेजों के खिलाफ जनजातियों को एकीकृत रूप से गोलबन्द करने में तेलंगा खड़िया का योगदान अद्वितीय है। इतिहासकार अंगद किशोर ने तेलंगा खड़िया के जीवन और कार्यों की विवेचना की और उन्हें महान जनजातीय क्रांतिकारी सेनानी बताया। समारोह के विशिष्ट अतिथि प्रो.डा. विनोद कुमार(अध्यक्ष,टीआरआइ, खोरठा, कोआर्डिनेटर,डीआरआइ, डीएसपीएसयू,रांची) ने कहा कि अपनी सभ्यता और संस्कृति से जनजातीय समाज की किसी की समझौता नहीं करने की उनकी प्रवृति ऐतिहासिक है और यही कारण है कि जनजातियों वीरों ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। प्रो. डा. बिनोद कुमार ने जोर देकर कहा कि जनजातियों का संघर्ष आपनी आजादी की रक्षा के लिए ही नहीं बल्कि अपनी संस्कृति रक्षा के लिए भी था। सर्वप्रथम जंयती समारोह के प्रारम्भ में आंमत्रित अतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर और शाल ओढ़ाकर सम्मानित किये जाने के बाद इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,क्षेत्रीय केन्द्र,रांची के निदेशक डा. कुमार संजय झा नें तेलंगा खड़िया जंयती की विवेचना की,इसकी ऐतिहासिक महता को रेखांकित किया और अतिथियों का स्वागत किया। डा.झा ने जनजातीय नायकों के अध्ययन पर ही नहीं बल्कि उनके दस्ताबेजीकरण पर भी जोर दिया और कहा कि विदेशियों के खिलाफ जनजातियों के ऐतिहासिक संघर्ष से देशवासियों को अवगत कराना अवश्यक है। मौके पर रांची विवि.,रांची में खड़िया विभाग के अध्यक्ष डा.बन्धु भगत,असिसटेंट प्रोफेसर डा. मेरी एस.सोरेन,संत जेवियर कालेज में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर कमल कुमरा बोस,डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि.,रांची में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा.जिंदर सिंह मुंडा, डा, सावित्री बड़ाइक,आर.के महतो सहित अन्य प्राध्यापक और शोधार्थी उपस्थित थे। समारोह का संचालन,अतिथियों का परिचय और धन्यवाद ज्ञापन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,रांची की रिसर्चर डा.स्त्रीग्धा सेनगुप्ता ने किया।